विचार बिन्दु

दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे जैसा है जो हवा के हर झौंके पर झुक जाता है। –माघ

योग वेदनाओं से मुक्ति की औषधि है

योग और आयुर्वेद दोनों ही प्रायोगिक विज्ञान हैं। इसलिये न केवल दोनों में अनेक समानतायें हैं, बल्कि चिकित्सा विज्ञान होने के नाते आयुर्वेद में योग के चिकित्सकीय और स्वास्थ्य-विषयक उपयोग के लिये प्रायोगिक कदम भी स्पष्ट दर्शित किये गये हैं। आचार्य चरक का मुख्य ध्येय योग के चिकित्सकीय उपयोग और रोगों के उपचार के लिये है, इसलिये स्पष्ट रूप से मन को आत्मा में लगाने की प्रक्रिया में शामिल वास्तविक कदम दिये हैं। वास्तव में आचार्य चरक ने योग में आवश्यक एकाग्रता को सुन्दर व्यावहारिक कदमों के द्वारा चिकित्सार्थ या स्वास्थ्य-रक्षणार्थ क्रियान्वित करने की विधि सुझाई है। जैसा कि हम आगे देखेंगे, यहां आप आचार्य पतंजलि और आचार्य चरक के दृष्टिकोण के बीच लगभग मौलिक समानता पाते हैं (देखें सन्दर्भ 1, च.शा.1.138-139:): आत्मेन्द्रियमनोर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। सुखदु:खमनारम्भादात्मस्थे मनसि स्थिरे।। निवर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते। सशरीरस्य योगज्ञास्तं योगमृषयो विदु:।।

ध्यानपूर्वक देखिये, आचार्य चरक की उपरोक्त परिभाषा और आचार्य पतंजलि की परिभाषा कि योग चित्त की वृत्तियों का निरोध है-योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:-में बहुत समानता है। इसी बात को कठोपनिषद् (2.3.11) में भी स्पष्ट किया गया है-तांयोगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्। तात्पर्य यह कि योग वही जब इन्द्रियाँ कब्जे में हों। यही वह स्थिति है जिसको श्वेताश्वतरोपनिषद् (2.12) के अनुसार जरा और मृत्यु सब समाप्त हो जाना कहा गया है: पृथिव्यप्तेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते। न तस्य रोगो न जरा न मृत्यु: प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।।

चरक संहिता में प्राणायाम की चर्चा न होते हुये भी प्राण-तत्व एवं उसका स्वास्थ्य व रोग के संदर्भ में गहन विश्लेषण मिलता है। योग और आयुर्वेद दोनों में ही रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण की भूमिका और पारस्परिक सम्बन्ध सर्वविदित हैं। योग अपनी समग्रता में कैवल्य की ओर ले जाता है, परन्तु कैवल्य प्राप्ति की यात्रा जरा-व्याधि पीड़ित तन में संभव नहीं है। आयुर्वेद के द्वारा जरा-व्याधि मुक्त शरीर और मस्तिष्क पाया जा सकता है जिसमें दोष, अग्नि, धातु, मलक्रिया सम हों तथा आत्मा, इन्द्रियां व मन प्रसन्न हों। योग मोक्ष का प्रवर्तक है। किन्तु अनेक बीमारियों से जूझ रहे समकालीन विश्व ने अपनी सुविधा से कैवल्योन्मुख योग को स्वास्थ्योन्मुख योगा बना लिया है। कैवल्योन्मुख हो या स्वास्थ्योन्मुख, योग व्यक्तिगत और वैश्विक कल्याण का बीज है। कैवल्योन्मुख योग की स्वास्थ्योन्मुखता आज आर्थिक वरदान भी हो गयी है। समकालीन विश्व में योग की व्यापारिक सफलता का राज योग की स्वास्थ्योन्मुखता में छिपा है। अब जब भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान योग (आसन, प्राणायाम और ध्यान आदि) का प्रजनन स्वास्थ्य पर प्रभाव पर शोध करने लगा है तो यकीनन योग अब कैवल्योन्मुख से स्वास्थ्योन्मुख हो गया है।

यों तो प्राचीन भारतीय मनीषियों ने योग पर बहुत कुछ समझा और लिखा है, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण कार्य महर्षि पतंजलि का है। पतंजलि योगसूत्र में योग के समस्त सिद्धान्तों, दर्शन और अभ्यास का सूत्रीकरण है। भारत में योग के उद्भव के प्रमाण लगभग तीन हजार वर्ष ईसा पूर्व से मिलते हैं। इसके पश्चात् योग का संदर्भ उपनिषदों, जिनका समयकाल प्राय: 500 से 600 ईसा पूर्व माना जाता है, में मिलता है। उसके बाद के ग्रन्थों में मुख्य रूप से महाभारत के उस अंश जिसे गीता कहा जाता है, और जिसका समयकाल ईसा के 400 वर्ष पूर्व से लेकर कुछ बाद तक माना जाता है, में योग पर गंभीर चर्चा की गई है। इन विविध संदर्भों को समाहित करते हुये एवं तत्समय में प्रचलित भारत के अनुभवजन्य-ज्ञान को पतञ्जिल ने 200 से 300 वर्ष ईसा पूर्व योगसूत्र की रचना की। बाद के वर्षों में 1950 से लेकर 1980 के दशक तक अनेक भारतीय योग शिक्षकों ने योग को पश्चिमी देशों में पहुंचाया। पतंजलि योगसूत्र के अनुसार योग के आठ अंग बताये गये हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। महर्षि पतञ्जिल ने योग को चित्त की वृत्तियों के निरोध-योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:- के रूप में परिभाषित करते हुये 196 सूत्रों के माध्यम से अंतत: कैवल्य- पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिसव: कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति- का मार्ग दिखाया है।

विश्व भर में हुई शोध से यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि आसन, प्राणायाम और ध्यान मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। असल में योग मानव स्वास्थ्य में समग्र बेहतरी लाता है। अत: योग को हम अपनी दिनचर्या में अवश्य शामिल करें।

योग के प्रथम पांच अंग अर्थात, यम, नियम, आसन, प्राणायाम तथा प्रत्याहार बहिरंग और बाकी तीन अंग धारणा, ध्यान, समाधि अंतरंग नाम से जाने जाते हैं। जब तक आप बहिरंग साधना को नहीं साध लेते तब तक अंतरंग साधना प्राप्त नहीं हो सकती। यम में पांच प्रकार यथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह शामिल हैं। नियम में भी पांच प्रकार यथा शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान शामिल हैं। आसन का अर्थ उस देहस्थिरता से है जो सुखदायी हो। आसन लग जाने पर श्वास-प्रश्वास की गति के विच्छेद के अभ्यास को ही प्राणायाम कहा जाता है। जहाँ एक ओर आसन देह के स्थिरता की साधना है वहीं दूसरी ओर प्राणायाम प्राणों के स्थिरता की साधना है। देह और प्राण की स्थिरता के बिना मन की स्थिरता, जो योग के अंतिम तीन अंगों से प्राप्त की जाती है, संभव नहीं है। प्रत्याहार वास्तव में प्राण और मन की स्थिरता के बीच सेतु का काम करता है। देहस्थैर्य और प्राणस्थैर्य से इंद्रियां बाहरी विषयों से हटकर अंतर्मुखी हो जाती हैं, इसे प्रत्याहार कहा जाता है। बहिर्मुखी गति के निरोध से अंतर्मुखी होकर मनस्थैर्य की चेष्टा को धारणा कहा जाता है। ध्यान इसके आगे की अवस्था है और ध्यान से आगे परमानंद की अवस्था ही समाधि है।

अष्टांग योग या आठ अंगों वाला योग वस्तुत: आठ आयामों वाला मार्ग है जिसमें आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। इनमें यम सार्वभौमिक मूल्यों पर, नियम व्यक्तिगत मूल्यों पर, आसन विभिन्न प्रकार की शारीरिक मुद्राओं और व्यायामों पर, प्राणायाम श्वसन और प्राण पर नियंत्रण, प्रत्याहार चेतनता पर नियंत्रण, धारणा एकाग्रता से सम्बंधित, ध्यानमन की स्थिरता से सम्बंधित एवं समाधि परमानन्द से संबंधित है। यहां यह समझना आवश्यक है कि अपने मूल स्वरुप में अष्टांग योग के आठों अंग आपस में संबंधित हैं और एक दूसरे से पृथक नहीं हैं।

योग का मूल दर्शन शरीर, मन, और आत्मा के योग, और इन सबका ब्रह्म के साथ योग को लेकर है। योग पर हमारे आधुनिक दृष्टिकोण ने इसे मात्र शारीरिक-मानसिक व्यायाम और श्वसन क्रिया मान लिया है। विश्वभर में योग पर जो वैज्ञानिक शोध हुई है वह वस्तुत: केवल आसन, प्राणायाम एवं ध्यान तक ही सीमित है, और उसका मूल उद्देश्य कैवल्य न होकर केवल स्वास्थ्य के विषय तक सीमित है। एक आश्चर्यजनक बात यह है कि विश्वभर में हुई शोध में से 83 प्रतिशत शोधपत्र, अर्थात् कुल 5754 शोधपत्रों में से 4781 ऐसे हैं जो पूर्णतया विदेश में रहने वाले वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गये हैं। शेष 17 प्रतिशत या 973 शोधपत्र या तो भारत में रहने वाले वैज्ञानिकों या भारतीयों और विदेशियों के साथ साझे में हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस योग का जन्म भारत में हुआ आज उस पर भारत में नाम मात्र की शोध हो रही है।

योग और आयुर्वेद के मूल उद्देश्य में अंतर को तो महर्षि चरक ने स्वयं यह कहते स्पष्ट किया है कि आयुर्वेद का उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और पीड़ित व्यक्ति के विकार का शमन है (च.सू.30.26): स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्य विकारप्रशमनम्। जबकि, योग व मोक्ष में वेदनायें नहीं, मोक्ष होने पर वेदनाओं से पूर्ण निवृत्ति हो जाती है, योग मोक्ष का प्रवर्तक है (च.शा. 1.137) योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्। मोक्षे निवृत्तिर्नि:शेषा योगो मोक्षप्रवर्तक:।। योग के यम व नियम और आयुर्वेद के आचार रसायनों में कोई अंतर नहीं है। योग के आसनों, व कुछ सीमा तक प्राणायाम व ध्यान, की आयुर्वेद के व्यायामों से साम्यता है। योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम व ध्यान तथा आयुर्वेद के व्यायाम, आचार रसायन व स्वास्थ्यवृत्त शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में परस्पर समान और समरूप परिणामदायक हैं। शारीरिक दोष दैव-व्यपाश्रय व युक्ति व्यपाश्रय चिकित्सा से शांत हो जाते हैं। मानसिक दोष ज्ञान (आत्म-ज्ञान), विज्ञान (यथार्थ ज्ञान), धैर्य (चित्त की स्थिरता), स्मृति (अनुभूत का स्मरण), व समाधि (विषयों से मन हटाकर आत्मस्थ होना) से शांत हो जाते हैं। वस्तुत: बुद्धि, धैर्य व स्वयं की समझ मनोरोग की परम औषधि है।

चरक संहिता में प्राणायाम की चर्चा न होते हुये भी प्राण-तत्व एवं उसका स्वास्थ्य व रोग के संदर्भ में गहन विश्लेषण मिलता है। योग और आयुर्वेद दोनों में ही रजोगुण, तमोगुण, और सतोगुण की भूमिका और पारस्परिक सम्बन्ध सर्वविदित हैं। योग अपनी समग्रता में कैवल्य की ओर ले जाता है और कैवल्य प्राप्ति की यात्रा जरा-व्याधि पीड़ित शरीर और मन:स्थिति में संभव नहीं है। आयुर्वेद के द्वारा जरा-व्याधि मुक्त शरीर और मस्तिष्क पाया जा सकता है जिसमें दोष, अग्नि, धातु, मलक्रिया सम हों तथा आत्मा, इन्द्रियां व मन प्रसन्न हों। योग व आयुर्वेद की जुगलबंदी स्वास्थ्य, सम्पदा व सुख के रूप में पुनर्परिभाषित कैवल्य देने में समर्थ है।

योग विश्वभर में आज 80 अरब डॉलर का उद्योग बन चुका है। अगर भारत में देखें तो योग और वेलनेस उद्योग 490 अरब रुपये का हो चुका है। शान्ति और स्वास्थ्य की खोज का यह बाज़ार अमेरिका में 28 से 30 बिलियन डॉलर का है। हम सबके लिये इस तमाम चर्चा का महत्त्व यह है कि योग्य आयुर्वेदाचार्यों और योगाचार्यों की मदद से योग को हम अपनी दिनचर्या में अवश्य शामिल करें। अब विश्व भर में हुई शोध से यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि आसन, प्राणायाम और ध्यान मानव के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। असल में योग मानव स्वास्थ्य में समग्र बेहतरी लाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

पूर्णिमा पर पुष्कर सरोवर में हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई

पुष्कर, (निसं)। धार्मिक नगरी पुष्कर में पवित्र सरोवर पर शनिवार को पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना कर आस्था की डुबकी लगाई।

इसी के साथ जिन श्रद्धालुओं को पूरे पवित्र वैशाख महीने के स्नान का धर्मलाभ प्राप्त करना है। उन्होंने भी आज से ही स्नान शुरू कर दिया। सरोवर में डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालुओं ने जगत पिता ब्रह्मा के दर्शन कर परिवार में खुशहाली की कामना की। पुरोहितों के अनुसार चैत्र मास की पूर्णिमा और हनुमान जयंती के महापर्व पर तीर्थ गुरु पुष्कर में स्नान कर दान पुण्य करने का खास महत्व धार्मिक ग्रन्थों और पुराणों में भी बताया गया है। इसके चलते हजारों की संख्या में पवित्र सरोवर के घाटों पर श्रद्धालुओं ने पूजा-अर्चना, स्नान करके दान पुण्य किया। पूर्णिमा स्नान करने के लिये श्रद्धालु प्रदेश के कोने-कोने से श्रद्धालु पुष्कर पहुंचे। तीर्थ पुरोहित पंडित दीपक शास्त्री ने बताया कि

- भक्तों ने ब्रह्मा के दर्शन कर खुशहाली की कामना की
- पूर्णिमा पर सरोवर में स्नान कर दान पुण्य करने का खास महत्व
- वैशाख का पवित्र स्नान भी शुरू हुआ

रामभक्त हनुमान जयंती और पूर्णिमा के दिन पुष्कर तीर्थ में स्नान और पूजा समेत दान पुण्य करने से परिवार में खुशहाली बनी रहती है और अक्षय गुना फल की प्राप्ति होती है। साथ ही उन्होंने बताया कि आज से ही वैशाख का पवित्र स्नान भी शुरू हो गया है।

पुष्कर में पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने पवित्र वैशाख महीने के स्नान का धर्मलाभ प्राप्त किया।

भाई का मृत्यु प्रमाण पत्र नहीं बना, परेशान युवक ने रोकी ट्रेन

धौलपुर, (निस)। जिले के बाड़ी कस्बे में सरकारी महकमों की व्यवस्थाओं से परेशान कंचनपुर थाना क्षेत्र के लखेपुरा गांव निवासी एक युवक ने कुछ ग्रामीणों के साथ मिलकर शहर के नैरोगेज रेल मार्ग पर पत्थर और बाइक लगाकर जाम लगा दिया। इसके चलते बसेड़ी से बाड़ी आ रही नैरोगेज ट्रेन करीब आधा घंटे तक ट्रैक पर ही खड़ी रही और लोगों की भीड़ मौके पर जमा हो गई।

सूचना पर पहुंची यातायात पुलिस ने विरोध कर रहे युवक को ट्रैक से उठाया और बाइक सहित पत्थरों को ट्रक से अलग कर खड़ी ट्रेन को रवाना किया। पुलिस आरोपी वीरेंद्र सिंह गुर्जर को अपने साथ ले गई है और उसकी बाइक को भी जब्त कर लिया। जानकारी के अनुसार 14 मार्च को कंचनपुर थाना क्षेत्र के लखेपुरागांव निवासी 28 वर्षीय किसान करतार सिंह पुत्र नेपाल सिंह गुर्जर की खेत पर काम करते समय बिजली का करंट लगने से मौत हो गई थी। इस मामले में पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंपा था और मामला दर्ज कर जांच की जा रही थी। आरोपी वीरेंद्र सिंह गुर्जर अपने भाई की मौत के बाद उसका मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के लिए ग्राम पंचायत और पंचायत समिति के बीच कई चक्कर

- पत्थर और बाइक लगाकर ट्रैक को जाम किया
- आधा घंटे तक ट्रैक पर खड़ी रही नैरोगेज ट्रेन
- कई चक्कर काटने के बाद भी नहीं बना था प्रमाण पत्र

लगा चुका था। उसने उपखंड अधिकारी से भी मामले में मृत्यु प्रमाण पत्र दिलाए जाने के लिए गुहार लगाई थी लेकिन कही भी कोई सुनवाई नहीं हुई। ऐसे में वह कई दिनों से परेशान चल रहा था।

शनिवार को ग्रामीणों के साथ वह रेलवे ट्रैक पर पहुंचा और अपनी बाइक सहित आस-पास से पत्थर डालकर ट्रैक को जाम कर दिया और वहीं पर लेट गया। इसके चलते बसेड़ी से बाड़ी आ रही नैरोगेज ट्रेन आधा घंटे तक ट्रैक पर खड़ी रही।

किसानों ने दी आंदोलन की चेतावनी

कोटा, (निसं)। किसान संयुक्त संघर्ष समन्वय समिति ने राज्य सरकार को चेतावनी दी है कि समय रहते किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो आन्दोलन से निकलने वाले परिणामों की समस्त जिम्मेदारी सरकार एवं प्रशासन की होगी।

सर्वोदय किसान मंडल, अखिल भारतीय किसान सभा, हाड़ौती किसान यूनियन, किसान महापंचायत, राजस्थान किसान महासभा, हाड़ौती किसान आन्दोलन, हाड़ौती किसान संघर्ष समिति, अखिल भारतीय किसान फैडरेशन आदि किसान संगठनों ने संयुक्त मांग-पत्र जारी किया है जिसमें किसानों के गेहूं की सम्पूर्ण फसल की खरीद 2000 रुपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के हिसाब से पड़ौसी राज्य मध्यप्रदेश की तर्ज पर किसी भी मंडी में किसान अपनी फसल समर्थन मूल्य पर बेच सकने में स्वतन्त्र हो, लहसुन की खरीद अच्छी क्वालिटी हेतु 5000 रुपये एवं हल्की क्वालिटी हेतु 3500 रुपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य की दर से तुरन्त खरीद शुरू करवाई जाए। प्रचार प्रसार संयोजक श्याम मनोहर हरित ने बताया कि इस दौरान किसान नेता फतेहचन्द, दूलीचन्द, नन्दकिशोर शर्मा, सुरेश गुर्जर, बलदेव सिंह फौजी, अब्दुल हम्मीद गौड़, कन्हैयालाल जैन, चतुरभुर्ज पहाड़िया सहित सभी प्रमुख किसान नेता उपस्थित रहे।

जोधपुर में नासा के सेंसर एविरिस एनजी ने भरी उड़ान

जोधपुर , (कासं)। कई विख्यात घटनाओं के साक्षी रहे जोधपुर शहर में शनिवार को एक और ऐतिहासिक घटना जुड़ गई। यहां अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के सेंसर एविरिस एनजी ने शनिवार को करीब पंद्रह मिनट तक उड़ान भरी। हालांकि इसरो अधिकारियों ने सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इसके बारे में ज्यादा जानकारियां साझा नहीं की। यहां से एविरिस एनजी सेंसर उदयपुर के लिए प्रस्थान कर गया।

काजरी परिसर स्थित इसरो के प्रादेशिक सुदूर संवेदन केंद्र (पश्चिम) में लोगों ने एविरिस एनजी को उड़ान भरते हुए देखा। बताया गया है कि अमरीकी सेंसर ने शहर की छतों में लगी निर्माण सामग्री की सैटेलाइट इमेज कैप्चर की है। इसमें औद्योगिक, आवासीय और अन्य स्लम क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। इसमें इसरो के रीजनल सेंटर के अधिकारियों ने फील्ड से डाटा जुटाया।

वहीं डाटा एयरक्राफ्ट में लगे सेंसर एविरिस एनजी ने संग्रहित किया। भारतीय एयरक्राफ्ट में लगे सेंसर के साथ इसरो के अधिकारी भी शामिल रहे। ये सेंसर भारतीय एयरक्राफ्ट में जमीन से 3-4 किलोमीटर तक की ऊंचाई पर उड़ा। वहां से इसका रिजोल्यूशन 3 मीटर पर रख इमेज कैप्चर की गई। अब इस डाटा को रिफाइन कर रिपोर्ट तैयार की जाएगी। उसके बाद अपने उद्देश्य में खरा उतरने पर इसे अमरीका के

- पंद्रह मिनट तक उड़ान भरी, सैटेलाइट इमेज कैप्चर की
- अमरीका की सेंसर तकनीक से एक्यूरेट लोकेशन देखी

अंतरिक्ष कार्यक्रम में शामिल कर दिया जाएगा।

सेंसर तकनीक का फायदा अंतिम छोर तक पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री के निर्देशों पर इस प्रोजेक्ट के लिए इसरो-एनआरएससी के अधिकारियों की अलग से टीम बनाई गई है। ये टीम इस सेंसर का फीडबैक तैयार करेगी। बताया गया है कि सरकारी निर्माण कार्यों में गुणवत्ता देखने और शहर की टाउन प्लानिंग की एक्यूरेट लोकेशन देखने के लिए अमरीका की ये सेंसर तकनीक काम में ली जा रही है।

ये एनजी 380 एनएम से 2510एनएम तक तरंग दैर्ध्य तक नापता है। इससे सरकार की ओर से बनाई गई हाउसिंग कॉलोनियों में कमियों के बारे में पता चल सकेगा। साथ ही कागजों में हुई हेरफेर को सैटेलाइट इमेजेज में देखना आसान हो जाएगा।

ज़नवाणी

अहिंसा का डंका बजाने की दिशा में सफल होंगे

मोदी साहब की इमेज विश्व में एक अलग ही तरह की पहचान के रूप में उभरी है और इसी का यह परिणाम है कि हमारे देश में एफडीआई का खजाना भर गया है। दूसरी ओर आतंकवादियों के खिलाफ विश्व में राष्ट्रों को एक किया गया है जो मिलकर कदम उठाने जैसी कार्यवाही पर सहमति बनी है। इसके लिए मोदी साहब सभी राष्ट्रों से एक सहमति बनाये कि वे विस्तारवादी नीति पर नहीं चलेंगे और किसी पर आक्रमण भी नहीं करेंगे। इससे हथियारों पर होने वाला खर्च विकास पर खर्च होगा और खुशहाली बढ़ेगी व सभी निर्भय होकर अपना-अपना कार्य कर सकेंगे।

आशा है मोदी साहब इस ओर एक रणनीति तैयार कर विश्व में शांति और अहिंसा का डंका बजाने की दिशा में सफल होंगे। **–घेवरचन्द गोदीका, जयपुर (राज.)**

समूचा विश्व ही एक कुटुम्ब

खुशखबर है कि पिछले दिनों ऑक्सफोर्ड डिक्सनरी में 70 भारतीय भाषाओं के शब्दों का समावेश किया गया है। यह हमारे लिए गर्व की बात है। आज वैश्विकरण के चलते समूचा विश्व ही एक कुटुम्ब बनता जा रहा है। भारतीय संस्कृति तो आदिकाल से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अनुगामी रही है। खेदजनक बात यह है कि आज हम अपने गौरवशाली मूल्यों से च्युत होते जा रहे हैं और विदेशी लोग हमारी धोती व साड़ी को अपना कर गौरवान्वित महसूस करते हैं। पश्चिमी संस्कृति वाले भी अब 'बेक टू बेसिक' का नारा देने लगे हैं, ये शुभ लक्षण ही तो है।

–प्रकाश कीर्तनिया, रामगढ़ शेखावाटी (राज.)

कार्टूनी नज़रिया

दक्कन क्रॉनिकल से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 1 अप्रैल, 2018

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2075, चित्रा नक्षत्र, व्याघात योग, कौलव करण, चन्द्रमा आज सायं 5:50 पर तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-धनु, बुध-मीन, गुरू-तुला, शुक्र-मेष, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में।

चित्रा नक्षत्र सोमवार प्रात: 5:52 तक, व्याघात योग रात्रि 3:26 तक है।

इसके पश्चात स्वाती नक्षत्र, हर्षण योग, तैतिल करण आरम्भ होगा।

आज राज और द्विपुष्कर योग सायं 5:05 से सोमवार प्रात: 5:52 तक है।

आज श्री एकलिंग जी पाटोत्सव उदपुर में है। आज इस्टर सण्डे है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:54 से 9:26 तक, लाभ-अमृत 9:26 से 12:31 तक, शुभ 2:03 से 3:35 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष

परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।

वृष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण मन खिन्न हो सकता है। व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। जीवनसाथी से वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कर्क

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाये रखना ठीक रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। स्वास्थ्य के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कन्या

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

तुला

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊँचा रहेगा।

वृश्चिक

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

धनु

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मकर

व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊँचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चने अभी बनी रहेगी। दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।